डॉ० नितिन कुलकर्णी, ने वन उत्पादकता संस्थान, रांची में निदेशक के रूप में पदभार ग्रहण किया

Live हिन्दुस्तान.com

झारखंड > रांची जमशेदपुर धनबाद गुमला हज़ारीबाग पलामू सिमडेगा लोहरदगा लातेहा

डॉ नितिन कुलकर्णी वन उत्पादकता संस्थान के निदेशक बने

हिन्दुस्तान टीम, रांची

Last updated: Sat, 10 Feb 2018 02:12 AM IST

डॉ नितिन कुलकर्णी ने शुक्रवार को वन उत्पादकता संस्थान, रांची ने नए निदेशक के रूप में पदभार ग्रहण किया। 31 जनवरी को डॉ एसए अंसारी के सेवानिवृत्ति के बाद यह पद खाली था। डॉ कुलकर्णी ने स्नातकोत्तर और पीएचडी की उपाधि जीवविज्ञान में जबलपुर (मध्यप्रदेश) से ली है। उनके सौ से अधिक शोध पत्रों, संशोधन पत्रिकाओं, अनुसंधान, परियोजना रिपोर्ट, पुस्तकों के अध्याय आदि का प्रकाशन हो चुका है। राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में उन्होंने सौ से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं। उन्हें वन कीट विज्ञान और वानिकी विस्तार में उत्कृष्ट योगदान के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

डॉ नितिन कुलकर्णी ने निदेशक का पदभार ग्रहण करने के बाद संस्थान के वैज्ञानिकों और अधिकारियों से विभिन्न शोध व विकास कार्यक्रमों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने राज्य वन विभाग, विश्वविद्यालयों, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद व अन्य मानक संस्थाओं के साथ काम करने की इच्छा व्यक्त की ताकि, वानिकी क्षेत्र और आम जनता के लिए संस्थान के शोध और विकास परिणाम को बढ़ाया जा सके। उन्होंने आदिवासियों की आजीविका और क्षमता निर्माण करने के साथ ही निकट भविष्य में संस्थान की तकनीकी श्रम शक्ति को मजबूत करने पर जोर दिया।

देशप्राण
स्वतंत्र हिन्दी दैनिक

शनिवार
10 फरवरी 2018

डॉ. कुलकर्णी वन उत्पादकता संस्थान के नये निदेशक

रांची, 9 फरवरी :

वन उत्पादकता संस्थान, रांची के नये निदेशक के पद पर शुक्रवार को डॉ. नितिन कुलकर्णी ने पदभार ग्रहण कर लिया है। गत 31 जनवरी को डॉ. एसए अंसारी के सेवानिवृति के बाद उक्त पद खाली था। डॉ. कुलकर्णी वैज्ञानिक-जी और कार्यकारी निदेशक, उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर ने पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून के द्वारा नियुक्ति के पश्चात उक्त पद पर योगदान दिया है। डॉ. कुलकर्णी ने अपनी

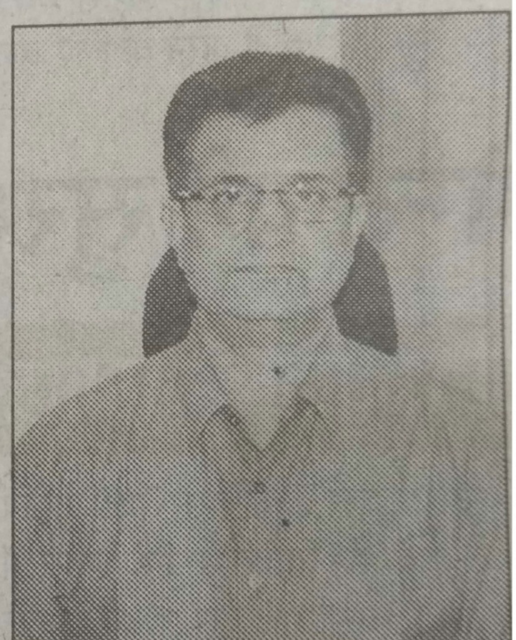

स्नातकोत्तर और पीएचडी की उपाधि जीवविज्ञान(कीट विज्ञान) में जबलपुर(मध्य प्रदेश) से ग्रहण की है। उसके पास कीट विज्ञान और वानिकी विस्तार गतिविधियों मे 25 वर्षों का अनुभव प्राप्त है।

प्रभात खबर
रांची, शनिवार 10.02.2018 | 06

डॉ कुलकर्णी बने आइएफपी के निदेशक

रांची. डॉ नितिन कुलकर्णी वन उत्पादकता संस्थान (आइएफपी) के नये निदेशक बनाये गये हैं. शुक्रवार को उन्होंने अपने पद पर योगदान दे दिया. इससे पूर्व वह उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में पदस्थापित थे. डॉ एसए अंसारी के 31 जनवरी 2018 को सेवानिवृत्त होने के बाद से यह पद खाली था. डॉ कुलकर्णी ने वन उत्पादकता संस्थान, रांची में निदेशक का प्रभार संभालने के बाद संस्थान के वैज्ञानिकों और अन्य अधिकारियों के साथ विभिन्न शोध और विकास कार्यक्रमों के बारे में जानकारी ली.

हिन्दुस्तान 02
• रांची • शनिवार • 10 फरवरी 2018

वन उत्पादकता संस्थान के निदेशक बने नितिन

रांची। डॉ नितिन कुलकर्णी ने शुक्रवार को वन उत्पादकता संस्थान, रांची ने नए निदेशक के रूप में पदभार ग्रहण किया। 31 जनवरी को डॉ एसए अंसारी के सेवानिवृत्ति के बाद यह पद खाली था। डॉ कुलकर्णी ने स्नातकोत्तर और पीएचडी की उपाधि जीवविज्ञान में जबलपुर (मध्यप्रदेश) से ली है।

रांची : वन उत्पादकता संस्थान के निदेशक बने डॉ. नितिन कुलकर्णी

Administration Jharkhand State

NewsCode Jharkhand | 1 day ago

डॉ एसए अंसारी के सेवा-निवृत्ति के बाद खाली था पद

रांची। डॉ. नितिन कुलकर्णी, वैज्ञानिक-जी और कार्यकारी निदेशक, उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर ने पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् (**आईसीएफआरई**) देहरादून द्वारा नियुक्ति के पश्चात वन उत्पादकता संस्थान, रांची में नए निदेशक के रूप पदभार ग्रहण किया। डॉ एसए अंसारी के 31 जनवरी, 2018 को सेवा-निवृत्ति के बाद यह पद खाली था।

कौन हैं डॉ. नितिन कुलकर्णी ?

कुलकर्णी ने अपनी स्नातकोत्तर और पीएचडी की उपाधि जीवविज्ञान (कीट विज्ञान) में जबलपुर (मध्य प्रदेश) से ग्रहण की है. उसके पास वन कीट विज्ञान और वानिकी विस्तार गतिविधियों में 25 से अधिक वर्षों का अनुभव है। उन्होंने मध्य भारत में प्रमुख वन कीट, कीटों के जीव विज्ञान, पर्यावरण-जीव विज्ञान और कीट प्रबंधन पर अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य (जैसे साल हार्टवुड बोरर, एंटीफीडेंट और नीम के निषेधात्मक प्रभाव, जंगली वृक्षों में लगने वाले कीड़ों के नियंत्रण उपायों, हमलावर प्रजाति जैसे लैंटेना कैमरा (पुटुस) और कई अन्य प्रजातियों के जैविक नियंत्रण पर कार्य किया है।

सेमिनारों और सिम्पोसिया में सैकड़ों शोध पत्र प्रस्तुत किए

100 से ज्यादा शोध पत्रों, संशोधन पत्रिकाओं, कार्यवाही, पुस्तकों के अध्याय, समीक्षा कार्यवाही, अनुसंधान रिपोर्ट, परियोजना रिपोर्ट का प्रकाशन हो चूका है। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, सेमिनारों और सिम्पोसिया में इन्होंने सैकड़ों शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं।

Read More: *रांची : 1447 मरीजों की देखभाल के लिए सदर से आयेंगी 150 नर्स*

वर्तमान में कुलकर्णी रुचि मिट्टी पर जैविक नियंत्रण और निस्पत्रक कीट जैसे सफेद ग्रब (होलोट्रीचिया रुस्तिका, एच म्यूसीडा और स्कीज़ोनीका रफ़ीकोलिस), टीक स्केलेतोनिजर (यूटिकोना मार्शेलिस) और टीक डिफोलीएटर (हाइब्लाई प्यूरा) जैसे एंटोमोपैथोजेनिक नेमेटोड्स और अन्य बायो-कंट्रोल पर काम करेंगे।

वन कीट विज्ञान व वानिकी विस्तार के लिये मिल चुका है कई पुरस्कार

पर्यावरण जीवविज्ञान जर्नल के कंसल्टिंग एडिटर हैं, और उन्हें वन कीट विज्ञान और वानिकी विस्तार में उत्कृष्ट योगदान के लिए डॉ. कुलकर्णी को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची में निदेशक का प्रभार संभालने के बाद डॉ कुलकर्णी ने संस्थान के वैज्ञानिकों और अन्य अधिकारियों के साथ विभिन्न शोध और विकास कार्यक्रमों के बारे में विस्तृत चर्चा की।

Read More: *रांची : कोयला चोरी में गई जेएमएम विधायक की सदस्यता*

उन्होंने राज्य वन विभाग, अन्य अनुसंधान संस्थानों, विश्वविद्यालयों, भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद्, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसन्धान परिषद् एवं अन्य मानक संस्थाओं के निकट समन्वय में काम करने की इच्छा व्यक्त की ताकि वानिकी क्षेत्र और आम जनता के सुधार के लिए संस्थान के शोध और विकास के परिणाम को और बढ़ाया जा सके।

ग्रामीणों के लिए रोजगार सृजन के मॉड्यूल का दे चुके हैं सुझाव

बिहार, पश्चिम बंगाल और झारखंड के विशिष्ट प्राकृतिक एवं पारिस्थितिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए कुछ मॉड्यूल तैयार करने का भी सुझाव दिया, जो ग्रामीणों के लिए स्थिर आय और रोजगार सृजन के अवसर पैदा कर सके। उन्होंने आदिवासियों की आजीविका और क्षमता निर्माण की जरूरत पर उन्होंने जोर दिया।

उन्होंने संस्थान के वैज्ञानिकों को संस्थान द्वारा विकसित की गई तकनीकों को जड़ स्तर पर बदलने और उन्नत शोध कार्य के लिए बाहरी धन की मांग के लिए कुछ परियोजनाएं तैयार करने और संस्थागत बुनियादी ढांचे को मजबूत करने का भी अनुरोध किया।

तकनीकी श्रम शक्ति को मजबूत करने की योजना पर दिया बल

निकट भविष्य में कुलकर्णी संस्थान की तकनीकी श्रम शक्ति को मजबूत करने की योजना बना रहे हैं। उन्होंने संस्थान के विभिन्न क्षेत्रीय शोध केंद्रों यथा मांडर, चंदवा, हाजीपुर, वन विज्ञान केंद्र के निरीक्षण करने की इच्छा भी व्यक्त की। जहां भी आवश्यक हो, उनके विकास और उन्नयन योजना का प्रस्ताव किया।

इस बात की जानकारी, रांची वन उत्पादकता संस्थान के जनसंपर्क अधिकारी शम्भुनाथ मिश्रा ने दी।

(अन्य झारखंड समाचार के लिए न्यूज़कोड मोबाइल ऐप डाउनलोड करें. आप हमें फ़ेसबुक और ट्विटर पर फ़ॉलो भी कर सकते हैं.)